1 Interpretation of Weather Maps

— मौसम मानचित्र वर्णन विधि
(Description Method of Weather Map):-

मौसम मानचित्रों में किसी क्षेत्र की अल्पकालीन वायुमण्डलीय दशाएं जैसे- वायुमण्डलीय दाब, पवन की दिशा, पवन - वेग, वर्षण की मात्रा, आकाश एवं समूह की दशा तथा दैनिक तापमानों का प्रसामान्यों से विचलन आदि प्रदर्शित किया जाता है।

मौसम मानचित्रों में वायुमण्डलीय दशाओं का प्रदर्शन संकेताक्षरों से किया जाता है। मौसम तत्वों की सांकेतिक भाषा का विकास सर्वप्रथम अंग्रेज एडमिरल ब्यूफोर्ट ने सन् 1806 एवं 1840 ई. में किया। सन 1935 ई. में एक अन्तर्राष्ट्रीय मौसम विभाग ने नव विकसित तकनीक पर आधारित एक नवीन मौसम संकेत प्रणाली को अपनाया जिसका प्रयोग अधिकांश देश इसमें कुछ आंशिक परिवर्तन करने के बाद कर रहे हैं।

भारत में मौसम विज्ञान सेवा

सेवा विभाग की स्थापना सन् 1875 ई. में हुई थी और इसका मुख्य कार्यालय शिमला में था। कालान्तर में मौसम विभाग का विस्तार हुआ और इसका केन्द्रिय कार्यालय शिमला से हटाकर (पुणे) पुना में स्थापित किया गया। भारतीय दैनिक मौसम रिपोर्ट प्रतिदिन इसी स्थान से प्रकाशित होती है। भारतीय दैनिक मौसम मानचित्र मर्केटर प्रक्षेप पर बनाए जाते हैं।

मौसम मानचित्र के अध्ययन या वर्णन से पूर्व इसमें प्रयुक्त संकेताक्षरों का जान लेना आवश्यक होता है। किसी भी मौसम मानचित्रों को निम्न शीर्षकों में अध्ययन किया जाना चाहिए।

(i) प्रारम्भिक सूचना (प्रेक्षण की तिथि, दिन तथा समय)

(ii) वायुमण्डलीय दाब :—

(a) उच्च वायुदाब
(b) निम्न वायुदाब
(c) समदाब रेखाओं की प्रवृत्ति
(d) दाब प्रवणता

(iii) पवन :—
(a) पवन की दिशा
(b) पवन का वेग

(iv) आकाश की दशा :—
(a) मेघावरण की मात्रा
(b) मेघों की प्रकृति
(c) अन्य वायुमण्डलीय परिघटना

(v) समुद्र की दशा

(vi) वर्षण :—
(a) वर्षण का सामान्य वितरण
(b) भारी वर्षण के क्षेत्र

(vii) अधिकतम व न्यूनतम तापमान का प्रसामान्य से विचलन।

Next Class : To be continue

By : Dr. Md. Jamshed Alam